The following steps have been taken:- (i) Court of Inquiry under a Major General has been constituted; (ii) Adequate qualified personnel to inspect remaining ammunition sheds in the depot have been ordered to be moved.

The existing security and safety guidelines are:- (a) A broad policy letter regarding precautions to be taken to prevent fire accidents with the onset of summer was issued on 28th April, 1997, and repromulgated on 17th April, 2000. (b) Each ammunition depot has its own security and fire fighting instructions which are updated periodically. (c) Annual inspections are undertaken by technical as well as administrative heads. (d) Between 1996-97 up to 31.3.2000, Rs.241.73 crores were allocated for building standard storage accommodation. Out of this, Rs.126.25 crores were sanctioned in 1999-2000.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Now, there will be reply by the Minister of Civil Aviation. Mr. Minister, I would like to mention one thing. When I was a college-going boy, in 1952, there used to be a beautiful advertisement, "There is an air about India". We are confident that you will bring that air back to Air India.

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Poor performance and mismanagement of Air India -Contd.

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष महोदय, सुबह 12 बजे से रक्षा मंत्री जी के वक्तव्य को छोड़ कर एयर इंडिया की हालत जो पतली हुई है, कमजोर हुई है, इस पर आज जो बहस हुई है, मैं माननीय सदस्यों का बहुत आभार मानता हूं और उन्हें शुक्रिया और धन्यवाद करता हूं। जो बाकी इन्फ्रास्ट्रक्चर इस देश में है, उसके प्रति जितनी चिंता 50 वर्ष में रही है उतनी सिविल एविएशन के सेक्टर के प्रति नहीं रही है। उसके कारणों में मैं नहीं जाना चाहता हूं। लेकिन यह बात अपने आप में सच है। उपसभाध्यक्ष जी, आज यह कालिंग अटेंशन था। माननीय सदस्यों ने सवाल थोड़े संक्षेप में पूछने थे। राज्य सभा का यह आगस्त हाउस है। अभी बहुत से लोग इस पर बोलना चाहते थे। लेकिन जिन मित्रों ने आज सिविल एविएशन का यह कारपोरेशन जो एयर इंडिया है इस संस्था के बारे में जो विचार, जो बातें, जो चीजें रखी हैं शायद पहले सिविल एविएशन पर इतनी लम्बी बहस नहीं हुई। यह एक ही सब्जेक्ट पर हुई है। कालिंग अटेंशन में पहले इनका नाम था - श्री संजय निरुपम जी, श्री प्रेम

चन्द गुप्ता जी, श्री प्रफुल्ल पटेल जी, श्री सेनगुप्ता जी, श्री नरेन्द्र मोहन जी, श्री एम पी ए समद समदानी जी, श्री आर मार्गबन्धु जी, श्री जीवन राय जी, डा. राजा रमण्णा जी, श्री वायालार रवि जी, श्री तिरुनावुक्कारासु जी, श्री राजीव शुक्ला जी, श्री प्रधान जी और **...(व्यवधान)... श्री** बागड़ोदिया जी का नाम भूल गया हूं इसके लिए माफी मांगता हूं **...(व्यवधान)...** वह दूसरी जगह लिखा हुआ था। उन्होंने सुझाव दिए थे। हमको ठीक से पकड़ने का काम भी उन्होंने किया।

उपसभाध्यक्ष जी, मैंने शुरू में ही आपसे कहा कि इतनी रुचि, इतनी चिंता - और वह भी जो सिविल एविएशन जो ग्लैमरस डिपार्टमेंट है, उसमें। इसमें जो मजबूत लोग हैं वे चलते हैं जो समाज के अगुआ भी हैं। लेकिन इसके प्रति सदन की जो चिंता है यह जरूर होनी चाहिए। इसका मतलब है इसका रिश्ता आम जनता से गहरा जुड़ने वाला है। यह सदन जो है वह इस देश का एक तरह से एक छोटा स्वरूप है। लेकिन एक अनार और सौ बीमार **..(व्यवधान)** संजय निरुपम जी - इनके ऊपर भी हम आएंगे। हमें तो अभी आजू-बाजू, आमने-सामने, नीचे-ऊपर आपने काफी कसरत करायी है। लेकिन हम भी अपनी कसरत करके किसी तरह से यहां से जरूर सटकेंगे।

श्री संजय निरुपम : मैं एक बात कहूं, **...(व्यवधान)...** 'अब इधर-उधर की बात न कर, ये बता कि कारवां क्यों नहीं चला।' अब आप भूमिका छोड़ दीजिए।

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, मैं कहना चाहता हूं कि कोई बहस खण्ड-खण्ड नहीं हो सकती और किसी भी समस्या का खण्ड-खण्ड समाधान नहीं हो सकता। जीवन राय जी देश में राज कर रहे होते, अगर धरती हिंदुस्तान को समझे होते। महोदय, ये देश आज सिविल एविएशन के स्वास्थ्य के बारे में बात कर रहा है और हिंदुस्तान की एक-तिहाई आबादी पानी के लिए तरस रही है। कुछ लोग 70 रुपए का पानी पी रहे हैं, 70 रुपए का **....(व्यवधान)**....मैं आप की तरफ भी हूं और उन की तरफ भी हूं **....(व्यवधान)**....

SHRI EDUARDO FALEIRO: The Minister may turn to that side and then speak.

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल) : मंत्री जी, यह तो 'कहीं पर नजर है, कहीं पर निशाना' है। **...(व्यवधान)...**

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, हम तो एक तरफ ही नजर रखते हैं, कभी दूसरी तरफ रखी ही नहीं।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : सही लक्ष्य रखिए, लक्ष्य कहां है, वह देखिए ...(व्यवधान)...

श्री शरद यादव : हम तो अकेले ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सरला माहेश्वरी : अकेले ही चले थे ...

श्री शरद यादव : हम पतिव्रत नहीं पतिव्रता हैं, इसलिए हम अकेले ही चलते हैं। हमारी निगाह इधर-उधर नहीं जाती। हां, खूबसूरत चीज दिखे तो मस्ती में आते हैं। तो मैं आप से कहूं कि इन सारी बातों का जवाब देने के पहले मैं चाहता हूं कि आप ने जैसे तबियत से बात रखी है, वैसी तबियत से इस का इलाज भी है। मैं मानता हूं कि माननीय सदस्यों ने बड़ा काम यह किया कि इसकी बीमारी पकड़ ली। मैं आप से यह भी कह दूं कि भारत में आज कोई दिक्कत नहीं है। देशभर में 50 सालों में एक बड़ा काम यह हुआ है कि सारी बीमारी आप के रूबरू, आप के सामने खड़ी हुई है। अब इस चुनौती का मुकाबला मुल्क करेगा तो दुनिया में इस का कोई मुकाबला नहीं होगा और अगर इन समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला नहीं हुआ तो आप जैसे अभी जिन बीमारियों का जिक्र कर रहे थे, तो जिक्र करते-करते 'गालिब सोने के सिवाय कोई रास्ता नहीं है।'

तो सवाल यह है कि आप ने बीमारियों का तो बहुत जिक्र किया और कुछ साथियों ने इलाज का भी जिक्र किया, जैसे राजीव शुक्ला जी ने किया, प्रफुल्ल जी ने किया, केसवानी जी ने किया, बागड़ोदिया जी ने किया। उपसभाध्यक्ष जी, जिन्होंने सिर्फ बीमारियों का जिक्र किया, मैं उन का भी साधुवाद करता हूं क्योंकि अगर बीमारी का पता नहीं लगेगा तो फिर उस का इलाज भी नहीं हो सकता। इलाज होना भी जरूरी है और बीमारी का एहसास, सही तरीके से उस की पहचान भी जरूरी है।

अब बात तो कोई बहुत लंबी-चौड़ी नहीं है। जो बातें आप ने कही हैं, मैं उन को दोहराऊंगा तो वक्त जाया होगा। उपसभाध्यक्ष जी, सौ करोड़ का देश, फ्लीट कम हैं। फिर आप माननीय सदस्य तो यहां सदन में बैठे हैं, निकल ही नहीं सकते और हम आप को जवाब देने आ रहे थे तो तीन संसद सदस्य मिले। वह सिर्फ फ्लाइट के बारे में पूछ रहे थे और एक आदमी मिला जो नौकरी के बारे में पूछ रहा था। उपसभाध्यक्ष जी, मैं हिंदुस्तान की लोक सभा में सातवीं बार चुनकर आया हूं, लेकिन मैं ने सिविल एविएशन और जहाजी की सर्विस और इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़े, इस बारे में इतना रुझान पहली बार देखा है। पहले ऐसा मैं ने कभी नहीं देखा था। यह अच्छी बात है, बढ़िया बात है। उपसभाध्यक्ष जी, अब चादर छोटी है और उस पर ठण्ड का मौसम है। ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : लंगोटी लगाओगे?

श्री शरद यादव : लंगोटी लगाओगे तो मर जाओगे। ...**(व्यवधान)**... उपसभाध्यक्ष जी, नरेन्द्र मोहन जी ने जो बात कही है, आप ने बीमारियों का जिक्र किया है । तो असल बात यह है कि, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।'

उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से अपने मित्र से मुखातिब हूं। इस देश में एक कहावत है, बहुत बढ़िया चीज़ भी है इस देश में लेकिन पाखंड भी बहुत है, - 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। मन उसी का चंगा रहता है जिसका घर चंगा - 'घर चंगा तो कठौती में गंगा'। तो नरेन्द्र जी अपनी कम्पनी जब चलाते हैं तो वे घर जैसी चलाते हैं और यह अच्छी चीज़ है, यह बुरी चीज़ नहीं है। कभी इतिहास में यह बड़ी रही होगी, लेकिन अब हिन्दुस्तान में लोकशाही है, लोकतंत्र है, जिसका मतलब है कोआपरेटिव सिस्टम, सोशियल सिस्टम। ...**(व्यवधान)**... यह कौन अंग्रेज़ी में बोल रहा है ? मैं इंजीनियरिंग कॉलेज का टॉपर भी हूं। मैं रूरल इलाके से लेकर अरबन इलाके के हरेक आदमी की जड़-जड़ तक पहचानता हूं। ट्रांसलेशन में हिन्दुस्तान कोई चीज़ नहीं दे सका, एक क्रिएटिविटी तक नहीं दे सका। जो अंग्रेज़ीदां लोग हैं उनसे मैं कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में जो भी क्रिएटिविटी है, वह कबीर ने दी है, सूर ने दी है, तुलसी ने दी है। उपनिषद् किसी कॉलेज और अंग्रेज़ी से ट्रांसलेट नहीं हुआ। अंग्रेज़ी से कभी एक खोज तुमने नहीं की। अपनी भाषा से कटकर भी यहां पहुंचे हो, इसमें कोई शक नहीं है। अंग्रेज़ी को बोलकर आप यह सोचो कि मैं अंग्रेज़ी नहीं जानता, तो मैं आपको बता दूं कि मैंने अंग्रेज़ी पढ़कर के इंजीनियरिंग कॉलेज में टॉप किया है। भाषा जानना अच्छी चीज़ होती है लेकिन भाषा का जोकर बनना बुरी चीज़ है। आप वोट मांगते हो हिन्दुस्तान के लोगों क़ी भाषा में और आप बहस करते हो कि यह छोटा सा कानून आइन है, इसको दो मिनट में समझा जा सकता है, सिविल ऐविएशन को मैं डेढ़ पन्ने में बोल सकता हूं। इसको आप ऐसे हुलिया देते हो कि हमको आप क्वेश्चन पेपर देते हो 100 पन्ने का, 5 सेंटेंस में उसका जवाब होता है। मार्क्स ने लिखा है 18 साल बैठकर के, मार्क्सिस्ट लोग माफ करेंगे मुझे, कि जो सरप्लस आमदनी है वह समाज और राष्ट्र की है और 250 साल पहले कबीर पैदा हुए और इस धरती में पैदा हुए, कबीर ने यही बात दो लाइन के दोहे में कह दी, दो सेंटेंस में कह दी 'साईं इतना दीजिए जा में कुटुम्ब समाए, मैं भी भूखा न रहूं, साधु न भूखा जाए'। मनमोहन सिंह जी, जो आपका गुरू ग्रंथ साहिब है, वह रूरल इंटिलेक्ट ने लिखा है, लेकिन आप अंग्रेज़ी में भारत चलाना चाह रहे हैं और अंग्रेजी में इतना मिचला रहे हैं, इसलिए भारत नहीं बढ़ा। भारत में पानी चाहिए था। आप सिविल ऐविएशन के बारे में कह रहे हैं न, मैं अभी जोड़कर बताता हूं कि सिविल ऐविएशन कैसे बन सकता है। ...**(व्यवधान)**...

श्री जीवन राय : लेकिन मंत्री जी आज का एजेंडा सिविल ऐविएशन है।

श्री शरद यादव : जीवन राय जी, हम अच्छी तरह जानते हैं जहां बोलना है हमको और वहां आकर आपको फिक्स करेंगे, बगैर फिक्स किए नहीं सटकेंगे। आपको भी सटकाएंगे और हम भी सटकेंगे।

श्री जीवन राय : मैंने सोचा, भावना में भूल गए।

श्री शरद यादव : जो मित्र हिन्दी नहीं जानते, वे अंग्रेजी बोलते हैं, ठीक है ....

श्री जीवन राय : मैं तो कोशिश कर रहा हूं हिन्दी में बोलने की।

श्री शरद यादव : आपने कोशिश की, लेकिन आप अंग्रेज़ी में बोलते तो मैं स्वागत करता, सैल्यूट करता आपको। मैं उनके लिए कह रहा हूं जो अपनी भाषा समझते हैं, जिसको भारत समझता है। भाषा बुरी चीज़ नहीं है, ज्यादा से ज्यादा भाषा जाननी चाहिए लेकिन भाषा का मतलब यहां नया यूरोप बनाना नहीं है। एक-तिहाई भारत आज प्यासा है और 70 रुपए का पानी आप पीते हैं और फिर आप कहते हैं कि वॉटर पालिसी बन जाएगी, ड्रिंकिंग पालिसी बन जाएगी।

श्रीमती सरला माहेश्वरी : आपके मित्रों का हाल क्या हुआ, यह तो बताइए।

श्री शरद यादव : हम लोग 2 साल से आए हैं और आप भी एकाध साल हमारे साथ रहीं। यानी भारत को हम सब लोगों ने चलाया है। कोई यह नहीं कह सकता कि नहीं चलाया है।

उपसभाध्यक्ष जी, मैंने ये बातें इसलिए कहीं कि जो बहस खंड-खंड हो रही थी, वह जरा जुड़ जाए। यह देश गरीब है। इसलिए सिविल ऐवियेशन की हालत ऐसी पतली और बुरी है। अब इसलिए अच्छी हो रही है कि हिंदुस्तान के भीतर कुछ लोगों ने जेनुइनली, वाजिब तरीके से 50 बरस की आज़ादी में दौलत कमाई है। आज लोग कानपुर में फ्लाइट मांगते हैं, इलाहाबाद में फ्लाइट मांगते हैं, पूरे नॉर्थ-ईस्ट में फ्लाइट मांगते हैं, जबलपुर में फ्लाइट मांगते हैं, भीलवाड़ा में फ्लाइट मांगते हैं, कोटा में फ्लाइट मांगते हैं और अमृतसर में इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए पूरा का पूरा पंजाब एक साथ खड़ा होकर मांग कर रहा है। कलकत्ता के बारे में दादा रोज कहते हैं।

श्री दीपांकर मुखर्जी : बोलिए ना, कुछ तो बोलिए आज। आप बोल रहे हैं, मैं यहां बैठा हूं। मैं चला आया, मैं बिना फ्लाइट से ऐसे ही जमीन पर आ गया। अब तो आप बोल दीजिए कि कलकत्ता से टोकियो फ्लाइट चलेगी कि नहीं ?

श्री शरद यादव : मैंने कहा ना कि मैं ऐसी बात नहीं बोलूंगा। जहाज है नहीं तो मैं झूठ काहे को बोलूं ? आपको मालूम है कि सच बोलकर साढ़े तीन साल हम अंदर रहे। अमरीका का राष्ट्रपति गलत बोलता है तो सज़ा पाता है और यहां हम सच बोल दें तो हमको साढ़े तीन साल तक .....**(व्यवधान)** आप जानते हैं ....**(व्यवधान)**...

श्री दीपांकर मुखर्जी : हम दोनों एक साथ चले जाएंगे अंदर। आप बोल दीजिए कि कलकत्ता से टोकियो फ्लाइट चलेगी कि नहीं। बोल दीजिए आप, सोचिए मत।

श्री शरद यादव : मैं आपकी बात पर गंभीरता से लगा हूं लेकिन मैं आपको मुकम्मल बात नहीं कहूंगा इसलिए कि मैंने कहा कि जहाज की भारी कमी है। फाइनेंस मिनिस्टर यहां बैठे थे, वे चले गए ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती सरला माहेश्वरी : केवल कलकत्ता के लिए ही जहाज की कमी है।

श्री दीपांकर मुखर्जी : देखिए, मैं सब कागज लेकर आया हूं। आप बोलिए, आश्वासन दीजिए कि मैं इसके बारे में विचार कर रहा हूं, रि-कंसीडर कर रहा हूं। कुछ तो बोलिए

श्री शरद यादव : मैंने कहा कि मैं इस पर लगा हूं।

श्री दीपांकर मुखर्जी : "लगा हूं" इसका क्या मतलब होता है ?

श्रीमती सरला माहेश्वरी : आपके लगने से क्या होता है, जहाज लगना चाहिए।

श्री शरद यादव : आश्वासन बहुत बुरी चीज है। "लगा हूं" इसका मतलब है कि कोई रास्ता निकालूंगा, यह कहा मैंने।

श्री दीपांकर मुखर्जी : हां, यह हुआ ना। कोई रास्ता निकालेंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): From the flight of language come to this serious issue. ...*(Interruptions)*....

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष महोदय, अब मैं अपने विषय पर आता हूं। महोदय, सदस्यों ने बीमारी का ठीक पता लगाया है। कुछ साथियों ने बहुत रचनात्मक, कंस्ट्रक्टिव सजेशन दिए हैं। आपने दो-चार बातें कही हैं जिनसे मामला सुधर सकता है। एक तो फ्लीट का साईज़ बढ़े, जैसा कि प्रफुल्ल जी ने कहा और बाकी दूसरे माननीय सदस्यों ने भी कहा। अधिकांश मेंबर्स ने यह सजेशन दिया है। महोदय, सोविरियन राईट्स हमारे पास बहुत हैं दुनिया भर में जाने के लिए। हमारी जो फ्लीट है, एयर इंडिया, जिसको "महाराजा" कहते हैं, वह तो पहले ही चला गया। मैं आ जाता तो सबसे पहले "महाराजा" को बाहर

करता। हमारे पुरखों ने महाराजा भगाये थे, हमें महाराजा वापस नहीं लाना है लेकिन भारत का जो इंटरनेशनल कैरियर है, वह जिस ग्लोरी पर था, वह फिर वापस आए, इसके लिए फ्लीट बढ़नी चाहिए। इसके लिए हम ड्राई लीज़ पर 10 जहाज ले रहे हैं। अब मैं यह बात नहीं कह सकता कि ...(**व्यवधान**)...

श्री नरेन्द्र मोहन : मान्यवर, वह टैक्निकल कमेटी की रिपोर्ट एयर इंडिया के सामने है, आपके पास आ गई है। आपको तय करना है कि कौन से जहाज़ खरीदने हैं।

श्री शरद यादव : आपने सुना नहीं बहुत से लोग कह रहे थे कि उसमे एक्सपर्ट लोग रखने चाहिए। एक्सपर्ट्स ने यहां पहुंचा दिया इस देश को। ये एक्सपर्ट लोग बड़ी गजब चीज हैं।

श्री संजय निरुपम : तो क्या डांसर लोग एयर इंडिया चलाएंगे ? क्या फिल्म के प्रोड्यूसर्स एयर इंडिया चलाएंगे? क्या दारू बेचने वाले एयर इंडिया चलाएंगे ? हमने विषय को जितनी गंभीरता से रखा है, उतनी गंभीरता से आप जवाब दीजिए। विषय का मज़ाक मत उड़ाइए। आप चेयरमैन साहब के डिसीजन को चैलेंज कर रहे हैं। चेयरमैन साहब ने इस विषय के लिए परमीशन दी है। यह बहुत महत्वपूर्ण विषय है। पानी और बिजली की हमें भी चिंता है। हमने भी महाराष्ट्र में पानी और बिजली दी है। हमने भी सड़क बनवाई है। हमें भी भूख और गरीबी का अर्थ मालूम है। हमें भी बेरोजगारी का अर्थ मालूम है। हम भी उसके लिए काम कर रहे हैं। लेकिन यह भी एक विषय है। इस विषय को गंभीरतापूर्वक टैकल कीजिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस विषय का गम्भीरतापूर्वक जवाब दिया जाए। इसका मजाक नहीं उड़ाया जाए। यह मजाक नहीं है। मंत्री जी पार्लियामेंट को मजाक मत बनाइये। मंत्री जी इस सदन के सारे सदस्यों ने गम्भीरता से इस विषय पर विचार करने के लिए अपनी बात रखी है मजाक उड़ाने के लिए नहीं। ....(**व्यवधान**)....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Mr. Nirupam, please take your seat. The fact that we are going in a lighter way does not mean that the hon. Minister has lost sight of the gravity of the situation...*(Interruptions)*...He will come to it...*(Interruptions)*...

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, निरुपम जी गम्भीर मामले में अगम्भीर हो रहे हैं। मैं इस मामले में गम्भीर हूं और उनकी भावनाओं को भी समझता हूं कि एअर इंडिया मुम्बई में है। मैंने उनकी बात का कोई जबाव नहीं दिया, ऐसा आरोप लगाना बिल्कुल ठीक नहीं है। हां, हो सकता है कि आपको किसी चीज पर एतराज हो तो मैं उस विषय पर आपको ...(**व्यवधान**)...

श्री संजय निरुपम : सर, मेरा कोई व्यक्तिगत मामला नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please take your seat.

श्री शरद यादव : आज अजीब बात कर रहे हैं। आप मेरी बात सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम : यह एक गम्भीर विषय है। आप इस पर गम्भीरतापूर्वक जवाब दीजिए। एअर इंडिया के बारे में हर सदस्य यहां पर चिंतित है। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR):Mr. Nirupam, please, do not disturb him.

श्री शरद यादव : आप क्या बात कह रहे हैं। सदन का कोई सदस्य नहीं कह सकता है कि मैंने इस विषय को गम्भीरता से नहीं लिया है। ...**(व्यवधान)**...

श्री नरेन्द्र मोहन : मंत्री जी कृपया करके बता दीजिए। ...**(व्यवधान)**....

श्री शरद यादव : मैं बता रहा हूं कि फ्लीट कम है। जो कैरिब जैट है इसके घाटे का निदान क्या है? हमने कैरिब जैट के सौदे के मामले को सीबीआई को दे दिया है और मैं वायदा करता हूं कि जो आदमी भी इसमें हाथ लग गया, वह चाहे कुछ कर ले, लेकिन वह बचने वाला नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री ब्रतीन सेनगुप्त : सी.बी.आई. कब तक इन्क्वायरी कर लेगी। ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव : सी.बी.आई. मेरे हाथ में नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम : दो साल से कैरिब जैट के एग्रीमेंट से जुड़े सारे पेपर्स सी.बी.आई. के पास पड़े हैं। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR):Mr. Nirumpam, please, do not disturb him.

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, यह बुरी बात है। संजय यह ठीक बात नहीं है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम : मैं याद दिला रहा हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव : आप बार-बार याद मत दिलाइये। हमारी याददाश्त इतनी कमजोर नहीं है। हम उस पर आ रहे हैं। उपसभाध्यक्ष जी, कैरब जैट के कारण जब 103

करोड़ रुपये का नुकसान अपने गरीब देश को, भारत को हुआ तो इसकी मुझे बड़ी चोट पहुंची और मैंने उसके बारे में तीसरे दिन सीबीआई की जांच के आदेश दे दिये। मेरे पास जांच एजेंसी नहीं है जिसके बारे में सेनगुप्त जी पूछ रहे हैं। मेरी कोशिश होगी कि सीबीआई के डायरेक्टर से बात करके कहूं कि वह जल्दी से जल्दी, जितनी जल्दी हो सके इसके बारे में ...(व्यवधान)...

श्री ब्रतीन सेनगुप्ता : क्या आपने इसके बारे में कोई बात की है?

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : प्लीज, क्लेरिफिकेशन नहीं।

श्री शरद यादव : मैं आपसे कह रहा हूं कि मैं पूरी ताकत लगाऊंगा कि जल्दी से जल्दी इसकी जांच हो। एक पीएलआई है यानी प्रोडक्टिविटी लिंक्ड इंसेंटिव। यहां सभी पार्टियों के सदस्य बैठे हैं, एअर इंडिया का 80 करोड़ रुपये का घाटा है, इसके बारे में हमने कहा है कि यदि फ्यूल का दाम नहीं बढ़ा होता तो 40 करोड़ रुपये का हमको लाभ होता। अब यह पीएलआई है,- पीएलआई का मतलब है नौकरी पक्की और नौकरी पक्की के बाद काम करने का मुआवजा यानी हम अच्छा काम करे इसका मुआवजा। हर पार्टी के लोग यहां बैठे हैं, इस नेशनल कैरियर के बारे में आपकी चिंता मेरे लिए बहुत बड़ा शकून है, ताकत है, सिम्बल है। हम सब पार्टी के लोग बैठे हैं और संजय निरुपम जी वहां पर यूनियन चलाते हैं। यह कार्य यूनियन और मैनेजमेंट दोनों ने मिलकर किया है। ताली दोनों हाथों से मिलकर बजती है। एक हाथ से ताली नहीं बजती। निरुपम जी, आपसे बहुत ज्यादा बड़ी ट्रेड यूनियन के हम नेता रह चुके हैं।

श्री सतीश प्रधान : सर, संजय निरुपम एयर इंडिया की यूनियन के पदाधिकारी हैं, ऐसा मेरी जानकारी में नहीं है। दूसरा, कोई भी सम्माननीय सदस्य यूनियन का सदस्य हो, यूनियन का पदाधिकारी हो, यह मतलब की बात नहीं है। हम मैनेजमेंट करके बैठे हैं। एयर इंडिया के मंत्री जी सब अरेंजमेंट करके एयर इंडिया की तरफ से बात कर रहे हैं। मंत्री जी बताएं कि ट्रेड यूनियन के साथ जो कुछ भी ऐग्रीमेंट किया वह पूरे होश में ठीक ढंग से विचार करके, सोच समझकर मंत्री जी ने या उनके पदाधिकारियों ने किया है तो एक बार ऐग्रीमेंट हो जाने के बाद अब उस ऐग्रीमेंट पर सिग्नेचर करना ठीक नहीं था, गलत था या बराबर नहीं हुआ, इस तरह की चर्चा करना उचित नहीं होगा, ऐसा मुझे लगता है।

श्री नरेन्द्र मोहन : जिस ऐग्रीमेंट की बात कही जा रही है, उसी के कारण एयर इंडिया को बहुत ज्यादा घाटा हो रहा है।

श्री शरद यादव : आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। प्रधान जी, मैं यह नहीं कह रहा था। मैं निरुपम जी से अगर कुछ कह रहा हूं तो उनकी तरफ से आप क्यों खड़े हो गये हैं ? मैं यह नहीं कह रहा हूं कि निरुपम जी चलाते हैं ...**(व्यवधान)**...

श्री सतीश प्रधान : निरुपम जी शिव सेना के सदस्य हैं और मैं शिवसेना का प्रमुख हूं।

श्री शरद यादव : ठीक है। आपने कह दिया है। निरुपम जी उसके अध्यक्ष हैं या नहीं हैं लेकिन उनका असर मैं जानता हूं। मैंने अपनी पार्टी से लेकर, इधर की पार्टियों से लेकर उधर की - सभी पार्टियों से कहा है कि हम एयर इंडिया को मजबूत करना चाहते हैं, दुरुस्त करना चाहते हैं, ठीक करना चाहते हैं। इसकी हालत कोई बहुत ज्यादा नहीं बिगड़ी है। सिविल एविएशन डिपार्टमेंट में पांच कार्पोरेशन हैं। पांच में से एक नो प्रॉफिट नो लॉस में है- होटल कार्पोरेशन। तीन प्रॉफिट में हैं। एक एयर इंडिया है जो सिर्फ 90 करोड़ रुपये के घाटे में चल रही है। जिसमें, पूरे सिविल एविएशन डिपार्टमेंट में एक लाख वर्कर्स हैं, पांच लाख आदमियों की रोजी-रोटी चल रही है। जो बहुत से पब्लिक सैक्टर्स हैं, उनके कंपैरीटिवली - मैं आशावान हूं, मुझे यकीन है, मुझे पूरा विश्वास है कि अगले साल तक इसको उस ग्लोरी पर तो नहीं लेकिन ग्लोरी के रास्ते पर चलाने का काम करुंगा। इसके बारे में संजीदगी से एयर इंडिया की मीटिंग बुलाकर पहली बार आठ घंटे इस पर डिबेट की। उसमें बागड़ोदिया जी थे, उसमे केसवानी जी भी थे, केवल मेरी पार्टी के ही लोग नहीं थे, उसमें संजय निरुपम जी भी है। उसमें हम आठ घंटे विचार-विमर्श करते रहे। हमने कहा कि हम सब साथ हैं - उसमें अंबिका जो भी थीं - हमने आठ घंटे लगातार एयर इंडिया के बारे में डिबेट की और उस बारे मे क्या करना चाहिए, क्या रास्ता निकालना चाहिए, इस संबंध में कदम उठाए, स्टैप्स उठाए।

श्री सुरेश ए. केसवानी (महाराष्ट्र) : आपने जो कमेटी फॉर्म करने का वायदा किया था, उसके बारे में हम इंतजार कर रहे हैं।

श्री शरद यादव : मैं मानता हूं कि वह मैं नहीं कर पाया हूं, उसको मैं जल्दी से जल्दी कर दूंगा।

श्री प्रेमचन्द गुप्ता : वह सबसे जरूरी है।

श्री शरद यादव : आपकी बात बिल्कुल ठीक है। हमारे यहां ट्रेड यूनियन के प्रोटैक्शन के लॉज़ है। यह लोकतंत्र है और लोकतंत्र धीरे-धीरे चलता है। जब तेज चलता है तो फिर वह काफी मजबूती पा लेता है। ट्रेड यूनियन्स को कानून के अंदर बहुत ज्यादा जो अधिकार मिले हुए हैं, उसके चलते कई बार मैनेजमेंट ने कई तरह की गलतियां की हैं - यह

मैं मानता हूं लेकिन उन गलतियों के साथ साथ ट्रेड यूनियन्स को बहुत ज्यादा प्रोटैक्शन है। और आपको मैं जानकारी दूं तो आपको लगेगा कि आज से तीन साल पहले ढाई सौ हजार मजदूर जो कॉन्ट्रैक्ट लेबर थे, उनको हमें परमानेंट करना पड़ा। क्योंकि हाई कोर्ट का ऑर्डर था, इसलिए परमानेंट कर दिया। ...(**व्यवधान**)... जीवन राय जी इस बात से बहुत खुश हैं तो ढाई सौ मज़दूर और बढ़ गए वहां। हम वैसे ही दिक्कत में थे, फाइनेंशियल हालत हमारी अच्छी नहीं थी, इसके बावजूद ढाई सौ मज़दूर हम पर और लाद दिए गए। तो उनको भी हमें ही संभालना है। जब वह ज़िम्मेदारी हमारे पास है, तो उसको हमें निभाना है।

जहां तक इसके सुधार का मामला है, एक माननीय सदस्य ने कहा कि हमने नॉन प्रॉफिटेबल रूट से ही कर्मचारी निकाले हैं, यह बात सही नहीं है। हमने यू.के. और यू.एस.ए. से एक बड़ी संख्या में, तीन सौ के लगभग कर्मचारी दो जगहों से निकाले। यानी यह नहीं है कि हमने सिर्फ नॉन प्रॉफिटेबल रूट से ही निकाले। फिर हमने कई तरह के कदम उठाए। वी.आर.एस. स्कीम हम लागू करने वाले हैं, वह प्रोसेस में है और जल्दी ही लागू हो जाएगी। हमने उपाय किया है कि जो छुट्टी पर जाना चाहते हैं दो साल विदआउट पे, वे जा सकते हैं। उसको और पांच साल तक हम बढ़ा रहे हैं। यानी इसके ऊपर जो वर्कफोर्स का लोड है, जिस लोड के चलते हमारी संख्या कम है, यदि हमारे पास ज्यादा बड़ा फ्लीट होता तो वह संख्या ज्यादा होती।

मैं एक जानकारी और देना चाहता हूं कि यह जो सारी डिबेट हुई है, सदस्यों ने बहुत सी बातों का ज़िक्र किया तो वर्कफोर्स में पायलट भी आता है। उपसभाध्यक्ष जी, सुबह जब सभापति जी बैठे थे, वे तो उपराष्ट्रपति हैं, तो उपराष्ट्रपति से भी कई गुना ज्यादा तनख्वाह है हमारे पायलट की, कमांडर की। वह है वर्कर ट्रेड यूनियन का जो कहेगा "ज़िंदाबाद, हमारी मांगें पूरी करो, नहीं तो तुम्हारी....हमारी मांगें पूरी करो।"

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : शायद झाड़ू लगाने वाले की भी तनख्वाह उनसे ज्यादा हो। ...(**व्यवधान**)...

श्री नीलोत्पल बसु : जॉर्ज साहब मुस्कुरा रहे हैं।

श्री शरद यादव : जॉर्ज साहब ने इसके लिए बहुत वर्षों तक हाथ-पांव तुड़वाए और हम भी खूब ठुके हैं। हमारे भी दोनों पांव टूटे हुए हैं। तो उपसभाध्यक्ष जी, मैं पायलट के संबंध में निवेदन कर रहा था। हमारे यहां लगभग आठ परसेंट होंगे अफसर और पायलट और इंजीनियर्स होंगे लगभग चालीस से पैंतालीस परसेंट तक। हमारा जो पूरा 1200 करोड़ रुपए का वेज बिल है, उसमें से पैंतालीस फीसदी इनको ही जाता है। अब प्रफुल्ल जी कह रहे हैं कि जेट एयरवेज़ बहुत बढ़िया चल रहा है, तो मैंने कहा कि जैसे नरेन्द्र मोहन जी ने कहा कि

घर चंगा तो कठौती में गंगा यानी जब मन में आया तब रख लिया और जब मन में आया तब खिसका दिया। ...(**व्यवधान**)... दूसरी चीज़ है कि ये अलग काम भी करवा लेते हैं जो प्राइवेट एअरलाइन्स के लोग हैं। वे वर्कफोर्स में जोड़कर बताते हैं।

मैं एक बात और बता दूं आपको कि हमारे यहां 700 हैं और पूरी दुनिया में 300 हैं। हमारी वेजज़ और दुनिया की वेजेज़ में ज़मीन-आसमान का अंतर है। यदि कोई दिक्कत है तो मोटी बात समझ लो कि इसका फ्लीट बहुत छोटा और पुराना है। इसका जो पायलट है, जिसके घंटे के बारे में आप बता रहे हैं, वह यहां से पुराना जहाज़ गल्फ में ले जाता है। दो-तीन या चार घंटे का सफर है उसका। उसके ऑवर्स को भी बढ़ाने का काम तब हो सकता है जब हमारे पास नए जहाज़ आ जाएं। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रफुल पटेल : नए जहाज़ दिए जाएं।

श्री शरद यादव : प्रफुल्ल जी, आपने तो 45 साल राज किया। मेरी बात सुन लीजिए। खरीद के मामले में भी अफसर डरा हुआ है, पोलिटीशियंस डरा हुआ है और ज़रा खरीदा, ज़रा कुछ किया कि फिर आप ही सब लोग खड़े होकर अकेले एक आदमी को.... राजनीतिक जानवर मिल गया आपको कि दुनिया में सबसे ज्यादा वही तंग और तबाह। मैंने इसलिए कहा कि कमीशन बनाओ। जिसमें पचास साल के आफिसर, पचास साल की ज्यूडिशियरी, पचास साल के एम.एल.ए. और पचास साल के एम.पीज के कैपिटल टाउन में कितने मकान हैं, अचल सम्पत्ति है, उस पर बहस मत कराओ। उस पेपर को लाकर यहां भ्रष्टाचार पर बहस कराओ तब हिन्दुस्तान के राजनीतिक लोगों का चेहरा भी ठीक हो जाएगा और सब लोगों का चेहरा भी साफ हो जाएगा, एक्स-रे हो जा जाएगा। ...(**व्यवधान**)... बहस ठीक हो जाएगी। हम सोशल आर्गेनाइजेशन चलाते हैं चन्दे पर, ठीक बात है। लेकिन खरीद वाले मामले में आप कह रहे हैं कि नए ले लो। हमने पचास साल से अपनी क्रेडिबिलिटी बचाकर रखी है। .....(**व्यवधान**)..... मेरी बात सुन लीजिए। सवाल यह है कि इस मामले पर भी फूंक-फूंक कर कदम रखना होगा क्योंकि अभी तक राजीव गांधी के जमाने में खरीदे गए ए-320 की जांच सी.बी.आई. कर रही है। ...(**व्यवधान**)... मैंने कहा है कि हम सब तरह से उपाय करेंगे। हमने कई उपाए किए तब कहीं जाकर 90 करोड़ आया। अगर हम गलत हैं, हमारा मैनेजमेंट गलत है तो आपके पास ठोस खबर है तो ले आएं। संजय जी हमसे नाराज हो गए, उन्होंने कभी भी हमको ठोस खबर नहीं दी। वे मुंबई के रहने वाले हैं। ...(**व्यवधान**)... वे मुंबई में और बात करते हैं आपका धर्म, आपका कर्त्तव्य और आपकी ड्यूटी की। रहते तो हैं मुंबई में बिहारी और नीम पर करेला चढ़ा, गजब ही कर दिया। ...(**व्यवधान**)....

प्रो. आर.बी.एस. वर्मा (उत्तर प्रदेश): मंत्री जी ने कहा, नीम करेले पर चढ़ा। मान्यवर, आज तक यह कहीं नहीं देखा गया कि करेले पर नीम चढ़ा। करेला तो नीम पर चढ़ता है। ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव : मुझे मालूम है। मैं तो अधूरा आदमी हो गया। आप देशी आदमी हैं और आप में रूरल इंटलेक्ट ज्यादा है और मुझे में कम है। ...**(व्यवधान)**...

श्री प्रफुल पटेल : मंत्री जी, हमें नीम-करेले की बात में जवाब नहीं मिल रहा है। में आपसे दो स्पष्ट निवेदन करना चाहता हूं। एक तो यह है कि आप जो जहाज खरीदने की बात कर रहे हैं, वे जहाज कब खरीदेंगे? इसके लिए आशंकाएं है कि लोग आप पर आरोप-प्रत्यारोप करेंगे, आपने राजीव जी के समय की इक्विटी की बात भी कही है। सारी बातें किस प्रकार से हल करके नए जहाज कैसे लेंगे, एक तो यह बताइए? दूसरे जो लीज की बात है, आप अभी ड्राई लीज की बात कर रहे थे, आप लीजिए जरूर लीजिए हम भी आपको कहते हैं, लेकिन आप फिर कहेंगे कि इसके लिए आरोप-प्रत्यारोप से बचना चाहते हैं, इसलिए ड्राई लीज जहाज लें। इसके लिए आप मैकेनिज्म बताइए, कुछ करिए तो सही। आप दस-बीस साल पुराने खटारा जहाज मत लीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Mr. Patel, you have made your point. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAFUL PATEL: We got no answer. We are talking about rural water supply. We are talking of socialism. We are talking of everything else. Where is the answer? For 45 to 50 minutes, there has been no answer.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): I hope that you are seeking this clarification....*(Interruptions)*...

श्री प्रफुल पटेल : इनको रूरल डवलपमेंट में पटवा जी की जगह मिनिस्टर बना दीजिए। हमने कब कहा ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please, please. Prafulji, please take your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रफुल पटेल : बात करिए, लेकिन इनका मंत्रालय बदल दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please, please. Please do not enter into an argument with each other.

SHRI PRAFUL PATEL: I have been provoked.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Even if you are, don't get provoked.

SHRI PRAFUL PATEL: I have been provoked by saying, "You do not want to listen to the rural water supply problem or other village problems." Then, I am saying with all humility: Sharadji is a fine example of what the rural India is. He should be made the Rural Development Minister of India. We will be happy to see somebody else in his place. We are not objecting to it.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please do not enter into any dialogue with the Minister. When the Chair is there, address your queries to him through the Chair. It looks as if you are entering into a dialogue. I am here still.

Mr. Minister, please continue.

SHRI KAPIL SIBAL(Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir, through you, I want to make a request to the hon. Minister. Hon. Members of this House have raised some very important issues. Those of us who have not participated in the proceedings are very keen to hear the answers by the hon. Minister. I have been waiting very hard, for the last one hour almost, to hear those answers. The Minister has regaled us with a lot of things that he has stated. And, we are willing to stay here for the next three hours, to hear what he says. But there are other businesses of the House that have to be conducted. I request the hon. Minister, through you, Sir,...*(Interruptions)*....

AN HON. MEMBER: .....to conclude.

SHRI KAPIL SIBAL: No, no. It is for him to conclude, not for me. I would request the hon. Minister, through you, Sir, to try and make it concise so that we have productive proceedings in this House. I am making no suggestion. But this is a request I want to make to the hon. Minister through the hon. Vice-Chairman.

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, प्रफुल जी ने तो हमारे साथ अन्याय कर दिया। हम तो उन्हीं की बात कह रहे थे। वे कह रहे हैं कि नया लेना है, इस बारे में साफ-साफ बात कह दूं कि नई बात तो कह दूंगा लेकिन आपको मालूम है कि मेरा डिपार्टमेंट बहुत सेंसिटिव डिपार्टमेंट है और आपसे ज्यादा इस बात को कोई नहीं जानता, बात सही है या नहीं। मैं ऐसी बात कहूंगा जिससे मुझे काम करने में कोई दिक्कत न हो। मैंने कहा कि

हमने उनसे ड्राई लीज पर लेने का फैसला ले लिया है और माननीय सदस्य श्री कपिल जी, वे तो हमारी रक्षा भी करते रहे हैं...**(व्यवधान)**...

श्री कपिल सिब्बल : हमेशा करते रहेंगे।

श्री शरद यादव : सवाल यह है कि जो बात कही मैंने और उन्होंने ध्यान से सुनी होगी तथा उनसे ज्यादा तर्क समझने की कोई ताकत भी नहीं रखता होगा इसलिए बाकी चीजों का जवाब मैं अपनी बात में दे रहा हूं ...**(व्यवधान)**... सब जवाब दे दिया है फिर भी प्रफुल्ल जी मुझसे कहलवाना चाहते हैं कि आप नहीं लेने वाले, नहीं लेने वाले, मैं ऐसा नहीं कह रहा हूं इसलिए आप मुझसे नाराज मत होइए। आप नाराज मत होइए और दुनिया में कोई डिपार्टमेंट हो, मैं उस डिपार्टमेंट को चलाने के लिए तैयार हूं, मुझे कोई दिक्कत नहीं है ...**(व्यवधान)**

श्री प्रफुल्ल पटेल : मैं कहना ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : प्रफुल्ल जी, नाराज मत होइए, धीरज रखिए।

श्री शरद यादव : मैं इनकी बात ही कह रहा था कि ड्राई लीज पर इनकी संख्या बढ़े, इनका ही सुझाव था और मैंने कहा भी था कि सबसे ज्यादा रचनात्मक सुझाव इन्होंने दिए हैं क्योंकि इस मामले को ये समझते हैं, धंधा करने वाला आदमी इन बातों का ज्यादा समझता है। प्रेम गुप्ता जी, श्री केसवानी जी, बागड़ोदिया जी, नरेंद्र मोहन जी, ये हमारे गाइड फिलास्फर रहते हैं क्योंकि हम तो इंजीनियर आदमी हैं, टेक्नीकल आदमी हैं, लुहार आदमी हैं।

श्री दीपांकर मुखर्जी : इंजीनियर आदमी हैं तो कलकत्ते से टोकियो कर दीजिए...**(व्यवधान)**... कलकत्ते से टोकियो का एश्यारेंस देकर जाइए। क्योंकि जब बोल दिया कि इंजीनियर आदमी हैं तो कर दीजिए...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव : अब कपिल साहब हैं, हम अगर... **(व्यवधान)**...

श्री कपिल सिब्बल : हम आपसे बहुत संतुष्ट हैं, आपने सबका जवाब दे दिया अब आप आगे कार्रवाई कीजिए।

श्री शरद यादव : किसी सदस्य ने यह सवाल उठाया था कि हमारे पास ...**(व्यवधान)**...

5.00 P.M.

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे (गुजरात): ये क्या करें, इधर से कहते हैं जवाब दो, उधर से कहते हैं कि कन्क्लूड करो।

श्री शरद यादव : हम जो चाहेंगे वह करेंगे ...**(समय की घंटी)**... उपसभाध्यक्ष जी, एक माननीय सदस्य ने, सबका नाम नहीं लेना चाहूंगा, सब लिखकर रखा है, इन्होंने कहा था कि हमारे पास बहुत संपत्ति है, जिसे बेचकर हम इसे बढ़ा सकते हैं। हमारा इक्विटी बहुत कम है। हजार करोड़ रुपये हमें फायनेंस डिपार्टमेंट को देने हैं। यह आपको मालूम है कि अभी कारगिल वार हो गई, उड़ीसा में साइक्लोन हुआ और अब पानी का संकट है। अभी इस तरह की दिक्कत है इसलिए फायनेंस मिनिस्टर से जो वायदा हमें मिला था वह वादा पूरा नहीं हो पा रहा है क्योंकि हमारी इक्विटी बहुत कम है और हमारे पास रिस्ट्रेन है रिसोर्सेज का। उन्होंने एक सुझाव दिया था कि एयर इंडिया की जो प्रोपर्टी है उसे बेचकर हम एयर इंडिया को काफी लाभ पहुंचा सकते हैं। उन्होंने हमारे एक नरीमन प्वाइंट पर एक दफ्तर का नाम लिया है। मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वहां जो हमारा दफ्तर है, आज हो सकता है कि हमारा 90 करोड़ का जो घाटा है और हम ऐसी जगह बैठे हैं जहां यह ग्लैमरस डिपार्टमेंट है ...।

एक माननीय सदस्य : आप खुद भी ग्लेमरस दीख रहे हैं।

श्री शरद यादव : आपका मैं शुक्रिया अदा करता हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : कभी कभी चेयर की तरफ भी देखा करें।

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, इसकी मैं आपसे माफी मांगना चाहूंगा।

श्री ब्रतीन सेनगुप्त : एयर इंडिया के टिकट आपके यहां से नहीं मिलते लेकिन उन टिकटों की बाहर पहले ही बुकिंग हो जाती है। इससे सरकार को आठ सौ करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है। इसमें कमीशन एजेंटों को मिलता है।

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, जो माननीय सदस्य ने सुझाव दिया है वह हम मानने के लिए तैयार नहीं है। हम अपनी जायदाद बेचकर एयर इंडिया को नहीं बनायेंगे। हम उसको अपने तरीके से खड़ा करेंगे। इस संबंध में मैं सब को मुतमईन करना चाहता हूं कि अगले साल जब हम एयर इंडिया के बारे में बहस करेंगे तो आपको अच्छा लगेगा। ...**(व्यवधान)**... मैंने जो कुछ कहा है वह दूसरी बात है और माननीय सदस्य अलग सवाल उठा रहे हैं। इस समय मेरे पास एयर इंडिया के स्वास्थ्य का सवाल है, उसकी एकानामिक वाइबिलेटी का सवाल है, उसके लास का सवाल है।

श्री नरेन्द्र मोहन : मैं जानना चाहता हूं कि डिसइन्वेस्टमेंट के सवाल पर आप क्या कर रहे हैं?

श्री शरद यादव: प्रोसेस शुरू है।

श्री नरेन्द्र मोहन: प्रोसेस चालू है यानी डिस्इन्वेस्टमेंट करेंगे। आप कितनी परसेंट एक्विटी डिसइन्वेस्टमेंट कर रहे हैं।

श्री शरद यादव : जैसा प्रश्न उन्होंने पूछा है वैसा ही प्रश्न आप भी पूछ रहे हैं। लेकिन इस मामले में मेरी जुबान से कुछ निकलने वाला नहीं है। एक सुझाव यह आया है कि जो वी.आई.पी. और वी.वी.आई.पी. एयर इंडिया के जहाज को इंगेज करते हैं, मैं कहना चाहता हूं कि इस वक्त हमारी हालत पतली है। इसलिए हम सरकार से निवेदन करेंगे, विनती करेंगे कि ज्यादा अच्छा होगा। यह एक अच्छा सुझाव है, ठीक सुझाव है ...**(व्यवधान)**...सरकार मिलकर होती है, उसका कलेक्टवली डिसीजन होता है। जैसे आप अपनी पार्टी में मिले हुए हैं वैसे ही हम यहां मिले हुए हैं। यह मेल कोई बुरी चीज नहीं है **(व्यवधान)** मैंने कभी सेकुलरिज्म के बारे में .....

THE VICE CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Secularism has nothing to do with this problem. Please do not enlarge the scope of this discussion.

श्री शरद यादव उपसभाध्यक्ष जी, ये हमारे पुराने मित्र हैं इसलिए कह रहा था।

उपसभाध्यक्ष जी, मैंने आपसे कहा कि हमारी संख्या ज्यादा है और इस संख्या को घटाने के लिए हमने कई तरह के उपाय किए हैं। उन उपायों के बारे में मैं पहले बता चुका हूं। मजदूरों की जिंदगी का ख्याल करके उनके हित में भी काम करना है। जो आपने जी.एस.ए. और ट्रैवल एजेंट का सवाल उठाया है, इसमें जो घपला हो रहा है उसके बारे में हम एक पालिसी बनायेंगे और पालिसी बनाकर हर जगह सब लोगों के साथ इंटरेक्शन करेंगे और इस बारे में एक पालिसी बनायेंगे। इस मामले के बारे में मैं जानता हूं कि एअर इंडिया के घाटे में कुछ न कुछ कारण यह भी है जो ट्रैवल एजेंट हैं जो जी.एस.ए. हैं ये मालदार हुए हैं और एयर इंडिया कंगाल हुआ है, गरीब हुआ है। इस बारे में मैं कहना चाहता हूं कि इस सवाल के समाधान में हम जल्दी जल्दी लगे हुए हैं और इसके लिए कोई पालिसी बनाने में लगे हुए हैं। हमने 10 परसेंट ट्रैफिक बढ़ाया है। जब से हम आए हैं तब से 10 परसेंट बढ़ाया है जब कि हमारे पास जहाजों की कमी है। इसको बाइलेटरल करके टूरिज्म में जो दिक्कत हो रही है उसको दूर करने का प्रयास करेंगे। एअर इंडिया, उसको कोई नुकसान न पहुंचे इसके लिए बाइलेटरली शनैःशनैः, धीरे धीरे फूंक फूंक कर कदम उठा रही है। यहां पर हज वाला

सवाल भी उठा। सवाल लम्बा है। हज यात्रा का मामला हमारी फॉरेन मिनिस्टरी का मामला है। हज यात्रियों को ले जाना और लाना बहुत महत्वपूर्ण मामला है, उसके लिए हमारी जिम्मेदारी है। वह विषय लम्बा है। मैं आपसे इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि जो सवाल आपने उठाया है, निरुपम जी ने कहा है, मैं आपसे विनती करना चाहता हूं आप मुंबई में रहते हैं, सभी माननीय सदस्यों से मैं कहना चाहता हूं, पी.एल.आई. के मामले में सब मिल कर, सारे ट्रेड यूनियंस के लीडर बैठे हुए हैं, आप इसका निपटारा करवा दें। उनकी नौकरी जाने वाली है, उनकी नौकरी नहीं जाएगी, यह मैं गारंटी करूंगा। लेकिन हम सब मिल कर के पी.एल.आई. के मामले में कोई समाधान करने का काम करें। उपसभाध्यक्ष महोदय, पायलट हाइली पेड है। जो कमांडर होता है, उसको बनाने में सरकार का इतना पैसा खर्च होता है, उसका अनुमान नहीं है। उसका रिप्लेसमेंट भी कठिन चीज़ है। जब कठिन चीज़ है तो उसको निपटारे में दिक्कतें हमारे सामने हैं। लेकिन जो भी हो चाहे मेनेजमेंट के लोग हों, चाहे पायलट हों, इंजीनियर हों, एयर इंडिया में गो-स्लो स्ट्राइक चल रही है, अभी मुझे खबर दी गई मेनेजमेंट से। गो-स्लो इंडियन एयरलाइंस में भी चली थी जिससे आप सब लोगों को तकलीफ हुई, देश को तकलीफ हुई। मैं इस सदन के माध्यम से पायलट्स और इंजीनियर्स से भी अपील करना चाहता हूं। इस संस्था में उनकी उम्र गुज़री है। हम उनकी एक्सपर्टीज़ की रिस्पेक्ट करते हैं। लेकिन जिस संस्था में वे हैं और उसमें जिस तरह का काम और घटनाएं हुई हैं, उनका जिक्र मैं नहीं करना चाहता हूं। वे इतने हाइली पेड हैं कि हिन्दुस्तान के प्रेज़ीडेंट से भी ज्यादा पेड हैं और इस सदन में कोई आदमी नहीं है जो उनके बराबर महीने की तनख्वाह पाने वाला हो। इसलिए मैं उनसे अपील करता हूं और मैंने उनको चेतावनी भी दी है, यह घटना हुई है, मैंने उनको वार्न किया है, आपका भी सहयोग चाहूंगा। हमारा जो पेसेंजर जहाज़ में चलने वाला है, वह हमारा मेहमान है। उसी के चलते एयर इंडिया के मजदूर से ले कर देश भर की इज्जत, आबरू के साथ हमारी संपत्ति और दौलत पैदा होती है। उसके साथ क्रू और हमारे डिपार्टमेंट के लोग ऊपर से नीचे तक अधिकारियों का व्यवहार दुरुस्त हो, इसके लिए मैं कभी रात में, कभी दिन में अचानक जाता हूं क्योंकि उसको भी दुरुस्त करना है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जो लोग पहले भी यह काम करते रहे, पुराने हैं, उसको भूलें, हम भी भूलें, तुम भी भूलो, एयर इंडिया को बनाना है तो फिर जो सवाल मैम्बरान ने उठाये हैं, उनमें चार पांच मोटी-मोटी बातें हैं। उन मोटी मोटी बातों के ऊपर सुधार करने के लिए हम को कदम उठाना है। आप सब का सहयोग खास कर के पी0एल0आई0 में लेना है। आप सब लोग पी0एल0आई0 में सहयोग करेंगे। एयर इंडिया के बारे में जो आपकी चिंता है, उस चिंता का समाधान, रास्ता शुरू होगा। रहा सवाल एयर इंडिया में कोई मेनेजमेंट हो, कितना ही बड़ा अफसर हो, आपके पास यदि कोई ठोस सबूत हो, सिर्फ अखबार का नहीं,

ठोस सबूत हो तो आपको इसी सदन में यह वचन देता हूं, आपको यकीन दिलाता हूं कि कोई भी आदमी एयर इंडिया की सम्पत्ति जो देश की सम्पत्ति है, उसके साथ अमानत में ख्यानत कर रहा है और उसका प्रमाण यदि आपके पास है - जो पहले गलतियां की हैं उनकी जांच तो चल ही रही है - यदि आपके पास सप्रमाण कोई चीज होगी तो उस आदमी को किसी तरह से बख्शा नहीं जाएगा। उस पर ताकत के साथ, मजबूती के साथ हम एक्शन करने का काम करेंगे। यह हम आपसे वादा करते हैं। आपने जितने सवाल उठाए थे उसमें मुझसे जो संभव हो सका उनका ज्यादा से ज्यादा जवाब देने का मैंने काम किया है ...**(व्यवधान)**... मैं इन्हीं शब्दों के साथ ...**(व्यवधान)**...

SHRI SURESH A. KESWANI: Sir, I would like to make a simple point. The Minister has said that he is acquiring ten new aircrafts on dry lease. The Minister has also said that he is opening up the bilaterals. According to the newspaper reports 10,000 seats have been added by virtue of these bilaterals. Now, on the one hand, you have bilaterals and, on the other, if the product quality does not improve and if you acquire 10 aircraft on dry lease, you will be in effect reducing the utilisation of your total fleet from the present 3.5 hours to approximately 2 hours. Then, how will you pay for this dry lease? The outflow of funds in the case of a dry lease is higher than the acquisition of aircraft by bank finance.

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, जो अभी बाइलेटरल है इसके बावजूद भी हमारी कैपेसिटी है। अभी भी 30 परसेंट की कमी है। तो जो ड्राई लीज पर लेने वाले जहाज हैं, उनके लिए कोई कमी ट्रैफिक की हिंदुस्तान में नहीं है। मैं आपको एक और सूचना दूं कि दुनिया भर में सिविल एविएशन में सैचुरेशन हो गया है लेकिन हिंदुस्तान में सिविल एविएशन का बड़े पैमाने पर एक्सपैंशन का रास्ता है। 6 इंटरनेशनल एयरपोर्ट हमने बनाए हैं। अभी आगे और बनाने वाले हैं। तो टूरिस्ट से लेकर सिविल एविएशन में ट्रैफिक जो है उसकी कोई कमी नहीं है। जो आप कह रहे हैं वह हमारे ख्याल में है, ध्यान में है। ड्राई लीज पर जो जहाज ले रहे हैं वह इन सब चीजों का ख्याल करके ले रहे हैं ...**(व्यवधान)**...

एक बात मैं और कह दूं उपसभाध्यक्ष जी। केरल के मामले में एक सवाल और था ...**(व्यवधान)**... एक मिनट आपके सवाल का जवाब दे रहा हूं। केरल के मामले में उपसभाध्यक्ष जी, वहां अकेले एयर इंडिया नहीं चल रही है। जो कहा गया है कि केरल से गल्फ में जाने के लिए, तो वहां दुनिया की कई एयरलाइंस हैं यानी केरल में कोई एयर इंडिया ही नहीं चलती है, कई एयरलाइंस चलती हैं गल्फ के लिए - गल्फ एयर, इंडियन एयरलाइंस, एयर इंडिया। तो जो केरल के मामले में है उसमें यदि कोई डिसपैरिटी है तो निश्चित तौर पर

हम उसको देखेंगे। एयर इंडिया का ...(**व्यवधान**)... यदि ये जो एयरलाइंस हैं उनके साथ उसका मैच नहीं होता है तो वे जो गरीब लोग हैं वे सबसे बड़ी हमारी पूंजी हैं यानी गल्फ में हिंदुस्तान के जो लोग जाते हैं वे ही एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइंस को आज जिंदा रखे हुए हैं। यदि उनकी कोई दिक्कत होगी तो उसको मैं व्यक्तिगत तौर पर देखने का काम करूंगा।

SHRI VAYALAR RAVI: Will you please reduce the fare? I could not follow you. Don't say that you will look into it. Please reduce it.

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, बहुत विस्तारपूर्वक चर्चा हुई। सदन में मंत्री जी ने जवाब दिया। लेकिन मेरा अनुरोध है कि जिस तरह से पिन-प्वाइंटेड बहुत सारी बातें की गयी, यहां पर जिस तरह से सवालात रखे गए उनका सही ढंग से अभी जवाब नहीं आया। मंत्री जी ने नहीं दिया या नहीं दे सके। चाहूंगा उन बातों का गोल-गोल जवाब नहीं, पिन-प्वाइंटेड हो क्योंकि किसी भी समस्या के समाधान के लिए, निवारण के लिए कारण पर रोशनी डालना बहुत ही जरूरी है। बहुत सारे सवाल हमारे मित्र, सहयोगी श्री संजय निरुपम जी, प्रेमचन्द गुप्ता जी, प्रफुल्ल पटेल जी और बाकी सदस्यों ने उठाए। उनके बारे में जानकारी जरूरी है। घाटा क्यों हुआ, क्यों होता गया घाटा? घाटे को कैसे आप रिकवर करेंगे? जब संजय निरुपम जी कहते हैं या और जो जानकारी दी गयी कि 18 हजार करोड़ की सम्पत्ति है हमारे पास तो डिसइन्वेस्टमेंट की क्या जरूरत है?

प्रोफेशनल लोगों को शामिल किया जाएगा, नहीं किया जाएगा? जैसे कि उन्होंने कहा कि बोर्ड में ऐसे लोग आएंगे जिन्हें कॉमर्स या इस तरह के बिजनेस से, एयर लाइंस से दूर-दराज का रिश्ता नहीं है। उन को मित्रता के आधार पर या उन की पहचान के आधार पर उन लोगों को बोर्ड में लिया जाएगा ? उस के बारे में मंत्री जी बताना चाहेंगे। मंत्री जी बताना चाहेंगे कि दुनिया में सब से ज्यादा लोग हमारे हवाई जहाज में काम कर रहे हैं । जितने पैसेंजर्स नहीं भरते हैं, उस से ज्यादा एक हवाई जहाज पर लोग काम करते हैं। अगर एक पूरे बोइंग में 400 के करीब पैसेंजर्स आते हैं तो 700 आदमी एक हवाई जहाज पर काम कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... कम किए हैं, यह विश्व का रिकॉर्ड है। बाकी किसी मामले में एयर इंडिया का रिकॉर्ड नहीं है, हां यह हो सकता है कि एयर इंडिया का नीचे से सब से बड़ा रिकॉर्ड हो। उपसभाध्यक्ष जी, जिस तरह से एअर इंडिया की परफॉरमेंस हुई है, उस पर बात करनी होगी कि आप उसे कैसे सुधारेंगे जिस से मजदूरों के हितों की भी रक्षा हो, उन का भी घाटा न हो और एयर इंडिया को भी घाटा न हो , एअर इंडिया आगे बढ़े, उस का परफॉरमेंस ठीक हो। उपसभाध्यक्ष जी, यूटिलिटी के बारे में जवाब नहीं आ रहा है ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Mr. Sinha, clarifications are ...*(interruptions)*...

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : सर, मैं पहली बार पूरी डिबेट में बोल रहा हूं। मैं बोलना चाहता था,लेकिन मेरे मित्रों ने सब कह दिया है। महोदय, हवाई जहाज की उम्र बहुत लंबी है जो कि जहाज के लिए भी रिस्की है। फिर उस की यूटिलिटी सब से कम है। ऐसे बहुत सारे सवालात हैं जिन का जवाब नहीं दिया गया है। अच्छा हो कि मंत्री जी इन बातों पर रोशनी डालें तो वह सदन के लिए, सरकार के लिए और हमारे तमाम लोगों के लिए बेहतर होगा।

श्री शरद यादव :उपसभाध्यक्ष जी, शत्रुघ्न जी जो पूछ रहे हैं, एक-एक बात का जवाब मैं दे चुका हूं। हां, एक बात का जवाब नहीं दिया है। ...**(व्यवधान)**... एक-एक चीज का जवाब दे चुका हूं। उस में अगर कुछ बातें जोड़कर कहता हूं तो उस का मतलब है कि कुछ बातें अपनी भी कह दूं। इन के साथ-साथ ...**(व्यवधान)**...

श्री शत्रुघ्न सिन्हा : मंत्री जी जी.एस.ए. की क्या जरूरत है, उन के चुनाव का क्या आधार है, किस कंसीडरेशन से जी.एस.ए. को लिया जाता है ? एयर इंडिया घाटे में जा रहा है तो जी.एस.ए. हर साल फायदे में कैसे जा रहे हैं ? उन्हें लाखों-करोड़ों का फायदा कैसे हो रहा है? महोदय, यह सब बड़ी गंभीर बातें हैं।

श्री शरद यादव : मैंने इस का पूरा जवाब अभी दिया है, अभी दिया है मैंने। सिर्फ एक बात का जवाब नहीं दिया है। उन्होंने पूछा है कि एक बोर्ड है जिस के कुछ लोगों के नाम छपे हैं ...**(व्यवधान)**... केसवानी जी, इन की बात का जवाब देने दीजिए।...**(व्यवधान)**... अरे बैठो न।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR): Please, please. Please take your seat. Now, no more interruptions, no more clarifications. You may not be happy, but this is the clarification given by Mr. Yadav.

श्री शरद यादव : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, शत्रुघ्न जी हमारे मित्र ही नहीं है बल्कि इस मामले में उन की बहुत रुचि है। वह हमेशा एयर इंडिया से चलते हैं और पैसा देकर चलते हैं। वह ऐसे आदमी नहीं हैं कि वह अपना क्लास अपग्रेड कराते हों। कुछ लोग हैं जो अपना क्लास अपग्रेड कराते हैं और यहां बड़े-बड़े नेता और बड़े पैसे वाले लोग हैं जो हमारे पास फोन करते हैं। मैं उन का नाम लूं तो यह ठीक नहीं होगा। उपसभाध्यक्ष जी, वह भी एक कारण है। उसे छोड़ देते हैं।

श्री ब्रतीन सेनगुप्त : आप बताएं कि पब्लिक सर्वेंट्स एयर इंडिया में न चलकर दूसरे एयरवेज में क्यों चलते हैं?

श्री शरद यादव : उस के ऊपर मैं बाद में आऊंगा। अभी शत्रुघ्न जी की बात का जवाब देना जरूरी है। उन के सवाल का जवाब देना मेरे लिए जरूरी है। महोदय, उन्होंने जो कुछ पूछा है, मैं ने उस में से एक-एक चीज बताई है। अगर आप रिकॉर्ड देखेंगे तो यह आप को लगेगा कि आप मेरे साथ न्याय नहीं कर रहे हैं। हां, उस में हम ने कहीं-कहीं अपना भी काम किया है।

महोदय, एक बात का जवाब मैं ने नहीं दिया है। वह बोर्ड प्रोसेस में है और पी.एस.ई.बी. से लेकर सब तरह के प्रोसेस से जाएगा। महोदय, अखबारों में जो नाम छपा है, उस में कुछ लोगों का सूबा भी गलत छपा है और नाम भी गलत छपा है। उस में हम ने एक साइंटिस्ट रखा है जोकि वर्ल्ड रिनाउंड साइंटिस्ट हैं, डा. एच.एम. श्रीवास्तव।

वे साथ में हैं, इतना बड़ा इंजीनियर है और अमरीका में उसका नाम है। तो मैं उस बोर्ड का नाम इसलिए नहीं कह रहा था क्योंकि वह प्रोसैस में है और इसलिए मैंने उसका जवाब नहीं दिया, जवाब मैं दे सकता था।

महोदय, नाचना और गाना बुरी चीज़ नहीं है, मैं आपको खासकर कह रहा हूं संजय जी। हम रविशंकर जी को भारत रत्न दे रहे हैं। नृत्य हो, संगीत हो, हिन्दुस्तान की तहज़ीब, तबद्दुम और संस्कृति में यदि कोई ठोस दम है और कहीं अगर आपको कोई पूछता है तो हिन्दुस्तान का संगीत, न्यूमेरिकल और ज़ीरो, इसके कारण पूछता है, इसको छोड़कर आपने दुनिया को कुछ दिया ही नहीं है। तो जो सोनल मानसिंह, नर्तकी का नाम ले रहे हैं ....

उपसभाध्यक्ष (श्री अधिक शिरोडकर) : नाम किसी का नहीं लिया है।

श्री शरद यादव : नाम नहीं लिया है, मैं कह रहा हूं। तो मैं कहना चाहता हूं कि वह बोर्ड प्रोसैस में है और प्रोसैस में हो सकता है कि लोग ऐलिमिनेट हो जाएं। ...(व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम : उपसभाध्यक्ष जी, सबसे पहले तो मैं माननीय मंत्री जी को यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं कला विरोधी नहीं हूं, कलाकारों का सम्मान करना मुझे भी आता है, लेकिन कलाकारों को कौन सा काम देना चाहिए, कलाकारों का कैसे उपयोग करना चाहिए, मैं यह बताने की कोशिश कर रहा था।

दूसरे, मंत्री महोदय ने बताया कि हमारे पास जो भी ऐसैट है, 18,000 करोड़ रुपए का ऐसैट है, हम उसको बेचकर फंड रेज़ नहीं करेंगे। ठीक है, लेकिन एयर इंडिया की

तरफ से जो फ्यूचर प्लान हमारे पास आया है उसमें है कि हाऊ टू रिवाइव एयर इंडिया। तो उस फ्यूचर प्लान में तीसरे नम्बर पर इस बारे में है कि 'सैल आफ नॉन अदर प्रोडक्टिव ऐसैट्स', एयर इंडिया खुद कहती है कि जो नॉन प्रोडक्टिव ऐसैट्स हैं, उसको बेचकर हम फंड रेज़ करेंगे। आप बोलते हैं हम नहीं करेंगे, ठीक है, यह आपका निर्णय है। अब आप हमें यह बताएं कि आखिर फंड रेज़िंग का तरीका क्या है विदआउट डिसइन्वेस्टिंग एयर इंडिया? बगैर एयर इंडिया को बेचे, बगैर अपने नेशनल हाइवे को बेचे, आप कैसे फंड रेज़ करेंगे, यह बताइए?

श्री शरद यादव : उपसभाध्यक्ष जी, मैंने सिर्फ नरीमन् प्वाइंट का जो दफ्तर है, उसके बारे में कहा है।

श्री संजय निरुपम : नरीमन् प्वाइंट का दफ्तर बेचने की डिमांड मैंने नहीं की है और वह दफ्तर नहीं बेचना चाहिए।

श्री शरद यादव : मैंने एक ही सफाई दी कि वह बहुत कीमती चीज़ है, उससे भी पैसा मिल सकता है, ...

श्री संजय निरुपम : वह नहीं बेचना चाहिए।

श्री शरद यादव : लेकिन मैं उसके हक में नहीं हूं। इसके साथ ही साथ मैं बताना चाहता हूं कि होटल कारपोरेशन के बारे में इकनॉमिक ऐडवाइज़र सैट हो चुका है, हम एनाउंस कर चुके हैं, कैसे फंड रेज़ करना है, एक ऐग्ज़ेम्पल मैंने उसका भी दिया है। हमारे पास कई तरह की ज़मीन-दौलत है, हम उसको भी खुदवा रहे हैं। अभी दिल्ली में ही हमने बुलडोज़र लेकर खुद खड़े होकर अपनी ज़मीन पर कब्ज़ा करवाया है। तो इस काम में हम लगे हैं कि कैसे हमारी इक्विटी बढ़े और कैसे जहाजों को खरीदने का हमारा काम हो सके। एक बात जान लीजिए कि हम हर चीज़ के बारे में बोलते कम हैं लेकिन नतीजा जरूर निकाल देते हैं।

CLARIFICATIONS ON STATEMENT BY MINISTER

Explosion of Ammunitions in the Ammunition Depot, Bharatpur-*Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI ADHIK SHIRODKAR):This subject is over. Now the hon. Members would seek clarifications on the statement made by the Defence Minister. Before we start, I would like to read out the rule. It says. "A statement may be made by the Minister on a matter of public importance with the consent of the Chairman, but no questions shall